ISSN:2583-8849



धर्मेन्द्र कुमार सैनी
दौसा, राजस्थान

दूर से नजर आती झोंपड़ी

कितनी अच्छी लगती थी वो झोंपड़ी
जो मकान से दूर खेतों में बनी होती थी
एकांत क्षणों की सखी,
एक चारपाई या एक मचले को समेटकर।

मुझे नही लगता-
कोई गर्मी से तप्त हुआ होगा
मैं तो नही...बस लू से टकराव चलता रहा
हाँ,उस लू की हद भी,
सीमित थी बस टाटियों तक
लू टकराती और पानी में नहाकर भीतर आती।

अब कहाँ है?
दूर से नजर आती वह झोंपड़ी
वह मचला और चारपाई
उसमें टँगी हुई सुल्फी और तम्बाकू
अब लू टकराती है दीवारों से
अब तो खेत भी रूखे नजर आने लगे हैं।

गरीब का मकान

वह झुलसाती लू में कुर्ते को सँभाले
भाग-भागकर ईंट दे रही है
ताकि पिता पर एक मजदूर का भार कम पड़े।

वक्त हुआ नहीं कि वह चाय घोंट लाती है
पशुओं को दे आती है चारा
ताकि माँ के पैर दर्द न करे।

वह बाँधे है गौरवर्णी मुख पर दुपट्टा
ताकि यौवन मुरझा न उठे

मिस्त्री बड़े मजे से बीड़ी सुलगाये
व्यस्त है अपने काम में
दीवार चुनने में
किसी गरीब के सपने बुनने में।

एक गरीब पिता के मकान में
तीनों का मिश्रण होता है।